**AGRICULTURE UNIVERSITY,**
**JODHPUR**
JODHPUR 342304, Rajasthan, India
**कृषि विष्वविद्यालय, जोधपुर**
**जोधपुर 342304, राजस्थान, भारत**

Telefax
0291 2570710(O)
0291-2570711
**E-mail:**
vcunivag@gmail.com

**डॉ एम एल मेहरिया**
**सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी**

दिनांक – 03.02.2019

# प्रेस–विज्ञप्ति

## सब्जी विज्ञान के महासमर का समापन

कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर में चल रहे प्रथम सब्जी विज्ञान कांग्रेस के समापन समारोह में डॉ. प्रेमनाथ, सहायक महानिदेशक, विश्व खाद्य संगठन, डॉ. डी.पी. रे, पूर्व कुलपति, उड़िसा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर, डॉ. विष्णुकांत, उप–महानिरीक्षक, पुलिस(आर.ए.सी.), डॉ. टी.जानकीराम, सहायक महानिदेशक, बागवानी, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली, डॉ. विजेन्द्र सिंह, निदेशक भारतीय सब्जी विज्ञान अनुसंधान संस्थान, वाराणसी एवं कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर के कुलपति डॉ. बलराज सिंह उपस्थित रहे। समापन समारोह के दौरान पिछले तीन दिनों में सब्जी विज्ञान के क्षेत्र में हो रहे अनुसंधानों से कृषकों के हितार्थ सब्जी उत्पादन हेतु विभिन्न उत्पादन तकनिकियों में सुधार एवं अनुशंसाओं पर विस्तृत चर्चा की गई, इस आयोजन के दौरान देश के विभिन्न भागों से आए हुए लगभग 300 वैज्ञानिकों ने सब्जी विज्ञान क्षेत्र में किए गए अनुसंधानों के शोध–पत्रों का वाचन एवं प्रदर्शन किया गया। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए डॉ. बलराज सिंह ने बताया कि वर्तमान समय में शहरों के आस–पास दूषित जल एवं भूमि में ताजी सब्जियों का उत्पादन किया जा रहा है। जिनमें निमेटोड्स, जीवाणु एवं विभिन्न प्रकार के मानव रोग कारकों के साथ–साथ सीसा एवं पारा जैसे भारी तत्व भी अधिक मात्रा में पाए जाने के कारण मानव स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। डॉ. सिंह ने सुझाव दिया कि इन क्षेत्रों में ताजी सब्जियों के विकल्प के रूप में यदि आवश्यक हो तो सझावटी पुष्पों का उत्पादन किया जा सकता हैं। जिनका उपयोग आहार हेतु नहीं किया जाता है। उन्होंने यह भी बताया कि इस प्रकार के सब्जी उत्पादन से मानव स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव लगातार देखने में आ रहे हैं, अतः अतिशीघ्र रोकने की आवश्यकता है। समापन समारोह में डॉ. विष्णुकांत, उप–महानिरीक्षक, पुलिस(आर.ए.सी.) जो की पूर्व में भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के छात्र रहे है। उन्होंने बताया की आने वाले समय में किसानों का लाभ देखकर ही सब्जियों के किस्मों का विकास करने की आवश्यकता है। इसके साथ–साथ उन्होंने कहा कि सब्जियों का पोषण मान बढ़ाने के उपाय करने चाहिए। डॉ. जानकी राम ने अपने उद्घोष में बताया कि भविष्य में जैव बागवानी प्रसंस्करण योग्य किस्मों का विकास कीट एवं रोगरोधी पोषकता से भरपूर किस्मों का विकास कर कृषकों तक पहुँचाने की आवश्यकता हैं। उन्होंने कृषि विश्वविद्यालय के अनुसंधान फार्म को देखकर बताया कि इस विश्वविद्यालय को खरपतवार रहित कृषि विश्वविद्यालय घोषित किया जा

सकता है। तीन दिवसीय कांग्रेस के दौरान सात तकनिकी सत्रों का आयोजन हुआ जिसमें 339 शोध–पत्र प्रकाशित हुए। उनमें से 31 शोध–पत्रों का वाचन एवं 308 शोध–पत्रों का प्रदर्शन हुआ। इस दौरान तीन प्रख्यात वैज्ञानिकों द्वारा स्मृति व्याख्यान भी प्रस्तुत किए गए। समापन समारोह के दौरान विशेष योग्य प्रदर्शन एवं वाचन करने वाले वैज्ञानिकों को पुरस्कृत भी किया गया।

तकनिकी सत्र में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के सब्जी विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ.बी.एस. तोमर ने भारत में सब्जियों के संकर बीज उत्पादन विषय पर शोध–पत्र पढ़ते हुए बताया कि सरकारी संस्थानों के पास सब्जियों से संबंधित उच्च गुणवत्ता की जैव विविधता एवं उत्पादन क्षेत्र उपलब्ध होने के कारण बड़े स्तर पर संकर बीज पैदा किए जाने की भरपूर संभावनाएं है जिनको देखते हुए टमाटर, बैंगन, फूलगोभी, पत्तागोभी, मिर्च एवं भिंडी जैसी सब्जियों का बीज उत्पादन किया जा सकता है। वर्तमान में लगभग 30 प्रतिशत सब्जियों के बीजों की आपूर्ति सरकारी संस्थानों द्वारा विकसित की गई किस्मों से हो रहा है। डॉ. तोमर ने बताया की कश्मीर घाटी के विभिन्न क्षेत्रों में गोभी वर्गीय सब्जियों के बीज उत्पादन की अपार सम्भावनाएं है। डॉ. नजीर अहमद ने कश्मीर घाटी में गोभीवर्गीय सब्जियों के बीज उत्पादन हेतु किसानों एवं बीज उत्पादक संस्थानों का आह्वान करते हुए कहा कि यह क्षेत्र सब्जियों के बीज उत्पादन हेतु पूर्णरूप से सुरक्षित एवं उपयुक्त है। इसके अतिरिक्त सब्जी बीज उत्पादन प्रसंस्करण एवं तकनिकी की प्रचार–प्रसार विषयों पर भी शोध–पत्रों का वाचन किया गया। सब्जी विज्ञान विषय में शिक्षा एवं वर्तमान चुनौतियों और भविष्य की संभावनाओं पर विस्तृत चर्चा करते हुए बताया गया कि इस क्षेत्र में संकर बीज उत्पादन, प्रसंस्करण एवं जैव विविधता के संरक्षण में स्वरोजगार की अपार संभावनाओं को देखते हुए युवाओं को इस क्षेत्र में प्रशिक्षित करने की आवश्यकता पर भी जोर दिया। समापन समारोह के दौरान आयोजकों को बधाई देते हुए इस प्रकार के राष्ट्रीय स्तरीय कार्यक्रम को सहजता से सम्पन्न कराने हेतु भारतीय सब्जी विज्ञान समिति द्वारा आभार व्यक्त किया गया। समापन समारोह के पश्चात् देश के विभिन्न भागों से आए हुए प्रख्यात वैज्ञानिकों एवं शोधकर्ताओं के दल ने कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर के अनुसंधान फार्म का भ्रमण कर वहाँ पर सब्जियों, जीरे व अन्य फसलों पर चल रहे अनुसंधान कार्यों का अवलोकन किया। वैज्ञानिकों के दल ने बताया कि बहुत ही कम समय में कृषि विश्वविद्यालय द्वारा अनुसंधान, शिक्षा एवं तकनिकी प्रसार पर किए गए कार्य प्रशंसनीय हैं एवं इस प्रकार के आयोजन हेतु कृषि विश्वविद्यालय का ध्वनि मत से आभार व्यक्त किया।

## डॉ. हरभजन सिंह एवं डॉ. एम.आर. ठाकुर स्मृति व्याख्यानों का भी हुआ आयोजन :–

तृतीय सब्जी विज्ञान कांग्रेस के दौरान डॉ. ए.एस. दत्ता, विभागाध्यक्ष, सब्जी विज्ञान, पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना ने डॉ. एम.आर. ठाकुर स्मृति व्याख्यान प्रस्तुत किया। जिसमें उन्होंने डॉ. एम.आर. ठाकुर द्वारा भारत में सब्जियों के आनुवांशिकी विकास द्वारा किए गए महत्वपूर्ण कार्यों एवं उनके द्वारा विकसित की गई किस्मों पर विस्तृत चर्चा की। डॉ. एम.

आर. ठाकुर द्वारा शुरू किए गए आनुवांशिक सुधार कार्यक्रमों की समीक्षा भी व्याख्यान के दौरान की गई। इस सत्र के दौरान दूसरा महत्वपूर्ण स्मृति व्याख्यान भारतीय सब्जी विज्ञान के जनक डॉ. हरभजन सिंह पर रखा गया। जिसका वाचन डॉ. गौतम कल्लू, पूर्व उप–महानिदेशक, बागवानी, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली द्वारा किया गया। जिसमें डॉ. कल्लू ने डॉ. हरभजन सिंह द्वारा देश की आजादी के तुरंत बाद सब्जी विज्ञान क्षेत्र में किए गए महत्वपूर्ण अनुसंधान कार्यों पर विस्तृत चर्चा की तथा उनके द्वारा 70 के दशक में विकसित की गई किस्में पूसा सावनी भिंडी की, पूसा रूबी टमाटर की एवं पूसा पर्पल लौंग बैंगन की आज भी कृषकों द्वारा बड़े स्तर पर उत्पादन लिए जाने एवं इन किस्मों का वैज्ञानिकों द्वारा नई किस्मों के विकास में उपयोग को अत्यधिक महत्वपूर्ण बताया। डॉ. कल्लू द्वारा व्याख्यान के दौरान जीन अभियांत्रिकी का सब्जी उत्पादन में महत्वपूर्ण योगदान एवं जैव प्रौद्योगिकी द्वारा सब्जियों की किस्मों में सुधार पर भी विस्तृत प्रकाश डाला।

डॉ एम एल मेहरिया

कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर
Agriculture University, Jodhpur
1st Vegetable Science Congress
Emerging Challenges in Vegetable Research and Education
(VEGCON-2019)
February 1-3, 2019
Society of Vegetable Science, Varanasi
Indian Council of Agricultural Research, New Delhi
Venue: Agriculture University, Jodhpur, Rajasthan
SIDA
SNF INDIA
IFFCO
Agriculture University
2013